शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:shodhmanthan.anubooks.com*

डॉ० एनी बेसेंट के राजनीतिक विचार

प्राप्तिः 11.07.2023
स्वीकृतः 20.12.2023

डॉ० नीरजा गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विभाग
श्री. कुंद कुंद जैन कॉलेज, खतौली (मुजफ्फरनगर)
ईमेलः *neerjagupta007@gmail.com*

78

सारांश

भारत तथा ब्रिटेन में स्वराज्य (होम रूम) के आदर्श को लोकप्रिय बनाने के लिए महत्वपूर्ण प्रारम्भिक कार्य किया द्यउन्होंने धर्म, दर्शन तथा भारतीय राजनीति के विषय में ब्रह्म साहित्य की रचना की जिससे उनकी तीव्र बुद्धि और व्यापक ज्ञान का पता लगता है। जिस समय भारत स्वराज्य तथा होम रूल के लिए संघर्ष कर रहा था, जब राष्ट्रवाद के विरुद्ध संगठित शक्तियां कहीं अधिक प्रचण्ड थीं।

डॉ. बेसेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की एक महान विभूति थी। उनमें न्याय तथा सत्य के उद्धार के लिए संघर्ष करने वाले विद्रोही की आत्मा विराजमान थी। जब वे नास्तिक और स्वतन्त्र विचारों की थी तब उनकी आत्मा को प्राचीन धर्मशास्त्रों तथा दर्शन से शान्ति मिली। उनमें दुर्दमनीय आदर्शवाद थाय उन्होंने समाजवाद, मजदूर आन्दोलनों, थियोसोफी तथा कॉमनवैल्थ ऑव इण्डिया बिल आदि के समर्थन में जो कार्य किये उन सबमें वह आदर्शवाद व्यक्त हुआ। 1913 से 1919 तक वे भारतीय राजनीति में सक्रिय रहीं।

मुख्य बिन्दु

राष्ट्रवाद, दर्शन, वेदांत, स्वतंत्रता, समाजवाद, लोकतंत्र, आध्यात्मिक, सत्ता, चिंतन, बंधुत्व, राष्ट्रमंडल, आदर्श।

प्रस्तावना

डॉ. एनी बेसेंट (1847–1933) जन्म से आइरिश थीं और एक समय ब्रिटेन के समाज वादियों में उनकी गणना होती थी। आधुनिक भारत के धार्मिक तथा राजनीतिक इतिहास में उनका महत्वपूर्ण स्थान है और आधुनिक हिन्दू धार्मिक पुनरुत्थान में उनकी भूमिका बहुत ही सम्मानपूर्ण है। उग्रवादी राजनीति तथा आयरलैण्ड के स्वराज्य (होम रूल) आन्दोलन की दीक्षा उन्होंने सर चार्ल्स ब्रेडलॉ से ली थी और थियोसोफी की शिक्षा उन्होंने मैडम ब्लैवट्स्की से ग्रहण की। थियोसोफीकल सोसाइटी की स्थापना ब्लैवट्स्की और औल्काट ने 1875 में की थी। उसके 14 वर्ष उपरान्त 10 मई, 1889 को एनी बेसेंट थियोसोफीकल सोसाइटी की सदस्या बन गयीं। ब्लैवट्स्की की 1891 में मृत्यु हो गयी। उसके बाद बेसेंट ने अपने को पूर्णतः थियोसोफी के प्रचार के लिए अर्पित कर दिया। अपनी अद्वितीय वाक्पटुता और हिन्दुत्व के आदर्शों के लिए उत्साह के कारण वे बहुत लोकप्रिय बन गयीं।

बेसेंट 1893 में 46 वर्ष की आयु में भारत आयीं और सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षिक कार्यों गयीं। 1898 में सेंट्रल हिन्दू कॉलिज तथा सेंट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना में उनका हाथ

रहा। जुट– उनका अनुरोध था कि स्कूलों में धार्मिक शिक्षा का नियमित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाय । 1907 में औल्काट की मृत्यु के बाद वे थियोसोफीकल सोसाइटी की अध्यक्षा चुन ली गयीं। 1914 में उन्होंने अपने आदर्शों के प्रचार के लिए 'द कॉमन वील' (जनवरी 2, 1914) और 'न्यू इण्डिया' नामक समाचार पत्रों की स्थापना की। 1917 में उनकी नजरबन्दी से देश में व्यापक असन्तोष फैला और उन्होंने जनता का इतना अधिक विश्वास प्राप्त कर लिया कि उसी वर्ष कलकत्ता में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा बना दी गयीं। 1925 में उन्होंने अपने भारतीय कॉमनवैल्थ अधिनियम (कॉमनवैल्थ आव इण्डिया बिल) के लिए आन्दोलन चलाया। 1925–26 में इंगलैण्ड की पार्लामेंट में उसका पाठन हुआ।

बेसेंट प्रभावशाली प्रचारक तथा ओजस्विनी लेखिका थीं। उन्होंने शिक्षा, धर्मशास्त्र तथा राजनीति पर अनेक ग्रन्थ लिखे। उनकी 'द इण्डियन आइडीयल्स' (भारतीय आदर्श) नामक पुस्तक भारतीय समाजशास्त्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है, उसमें कलकत्ता विश्वविद्यालय में दिये गये कमला व्याख्यानमाला का संग्रह है। उनकी धर्म पर, विशेषकर लोकप्रिय हिन्दू वर्म तथा थियोसोफी पर, पुस्तकें अब भी ध्यान से पढ़ी जाती है। भारतीय राष्ट्रवाद तथा राजनीति पर उन्होंने दो मुख्य ग्रन्य लिखे दृ 'इण्डिया, ए नेशन' (भारत, एक राष्ट्र) और 'हाउ इण्डिया रॉट हर फ्रीडम' (भारत ने अपनी स्वतन्त्रता का निर्माण कैसे किया। उन्होंने और भी अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें राष्ट्रवाद को धार्मिक दिशा देने की सिफारिश की। अपनी रचनाओं में उन्होंने हिन्दुत्व का गौरवगान किया और भारतीय सभ्यता को आधुनिक युग की बरसाती सभ्यताओं से अधिक श्रेश्ठ मानकर अभिनन्दित किया।

दार्शनिक आधार

उन्होंने 'अंग्रेजियत में रंगे हुए भारतीयों के वर्णसंकर तथा निष्फल आदर्शों' का परित्याग करने का भी समर्थन किया। किन्तु हिन्दुत्व के सभी पहलुओं में दृढ़ता से विश्वास करने पर भी उन्होंने बढ़ते हुए ऐहिक वाद तथा भौतिकवाद को ध्यान में रखते हुए हिन्दुत्व के दिव्य तथा पारलौकिक तत्वों को अधिक महत्व दिया। पुनर्जन्म के सिद्धान्तु ने उन्हें अत्यधिक मोहित किया था, और उनका विश्वास था कि अपने पूर्व जन्मों में वे हिन्दू थीं। उनका भगवद्गीता का अनुवाद तथा 'हिट्स ऑन द स्टडी आव द् भगवद्गीता' (भग वद्गीता के अध्ययन के लिए संकेत) शीर्षक पुस्तक हिन्दू धर्म तथा दर्शन में उनकी गम्भीर आस्था का प्रमाण हैद्य उनका अनुरोध था कि धर्म को ही सदाचार का आधार बनाया जाय और इसीलिए वे धार्मिक शिक्षा को आवश्यक मानती थीं।

बेसेंट भी हिन्दू दर्शनों तथा पंथों के सभी रूपों और पक्षों का पुनरुद्धार करना चाहती थीं। उनका दृष्टिकोण उदार था, न कि आलोचनात्मक, अतः उन्होंने हिन्दुत्व के सभी तत्वों को अक्षरशः और निरपेक्ष रूप से स्वीकार कर लिया। हिन्दू सर्वेश्वरवाद ने उन्हें विशेषतः आकृष्ट कियाय और वे अद्वैत वेदान्त को हिन्दुत्व तथा इस्लाम के बीच की कड़ी मानती थीं।

इतिहास दर्शन

बेसेंट ने एक अज्ञेयवादी के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया, किन्तु मैडम ब्लैबट्स्की के 'द सीक्रेट डॉक्ट्रिन' (गुप्त सिद्धान्त) के प्रभाव से अत्यधिक धार्मिक व्यक्ति बन गयीं। वे हिन्दुओं अवतार के सिद्धान्त को मानती थीं, जिसका अभिप्राय है कि हर ब्रह्माण्ड का ईश्वर विकास की किसी संकट की घड़ी में भौतिक रूप में प्रकट होता है।

थियोसोफी की शिक्षाओं की प्रतिपादक होने के नाते वे आध्यात्मिक तथा जातिगत दोनों ही प्रकार के विकास में विश्वास करती थीं। उन्होंने स्वीकार किया कि अब तक अपने उपविभागों सहित पाँच मुख्य जातियों का विकास हो चुका है। मुख्य जातियाँ इस प्रकार हैं:

(1) अवलेह की भाँति के आकृतिविहीन प्राणियों की आदि जाति।
(2) कुछ अधिक निश्चित आकृति वाले प्राणियों की आदि जाति।
(3) लैमूरी नाम की तीसरी आदि जाति जिसके अवशेष नीग्रो लोग तथा अन्य नीग्रोई (नीग्रोइड) जातियाँ हैं।
(4) अटलांटिकी (अटलांटियन) कही जाने वाली चौथी आदि जाति जिसमें टोल्टी, अक्कादीऔर मंगोल इत्यादि जातियाँ सम्मिलित हैं।
(5) आर्य नामक पाँचवीं आदि जाति जिसकी अब पाँच उपजातियाँ हैं :
(1) भारत के आर्य, (2) भूमध्य सागरीय आर्य (अरब तथा मिस्री), (3) ईरानी, (4) कैल्ट, और (5) ट्यूटन जातियाँ।"

राजनीतिक विचार

बेसेंट लिखती है: ''स्वतन्त्रता एक अलौकिक देवी हैय वह शक्तिशाली, कृपालु तथा कठोर है। वह भीड़ों के चीत्कार से, उच्छु खल वासनाओं के तकों से अथवा वर्ग के प्रति वर्ग की घृणा से किसी राष्ट्र में अवतरित नहीं हो सकती। स्वतन्त्रता पृथ्वी पर बाह्य जीवन में तब तक कभी अवतरित नहीं होगी जब तक कि वह पहले आकर मनुष्यों के ह्रदयों में विराजमान नहीं हो जाती, जब तक उच्च प्रकृति वासनाओं एवं प्रबल इच्छाओं की निम्न प्रकृति पर, अपना स्वार्थ पूरा करने तथा दूसरों को कुचल डालने की इच्छा पर, आधिपत्य स्थापित नहीं कर लेती। आत्मनिग्रह ही केवल वह नींव है जिस पर स्वतन्त्रता का निर्माण किया जा सकता है। उसके बिना आपको अराजकता उपलब्ध हो सकती है, स्वतन्त्रता नहीं, और वर्तमान अराजकता में जो भी वृद्धि होती है उसका मूल्य हमें अपना सुख देकर चुकाना पड़ेगा। किन्तु जब स्वतन्त्रता आयेगी तो वह ऐसे राष्ट्र में अवतरित होगी जिसके हर स्त्री और पुरुष ने आत्मनिग्रह और आत्मशासन सीख लिया है। और केवल तभी राजनीतिक स्वतन्त्रता का निर्माण किया जा सकेगा। चूंकि राजनीतिक स्वतन्त्रता व्यक्ति की स्वतन्त्रता का फल है।

उनका कथन है: ''मेरी मांग है कि प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे उसके विचार कुछ भी हों, अपने स्वतंत्र चिन्तन के परिणामों को सच्चाई और स्पष्टता के साथ व्यक्त करने का अधिकार हो। और इसके लिए उसे न अपने नागरिक अधिकारों से वंचित होना पड़े, न उसकी सामाजिक स्थिति नष्ट हो और न उसकी पारिवारिक शान्ति भंग हो। स्वतन्त्रता अमर और शाश्वत है, उसकी विजय निश्चित है, विलम्ब कितना ही हो जाय और भविष्य में भी विजय उसी की होगी। बेसेंट अरविन्द की भाँति स्वतन्त्रता को आत्मा का शाश्वत गुण मानती थीं, फिर भी उनका कहना था कि स्वतन्त्रता एक बहुमूल्य विरासत है और उसे महान उद्यम तथा अनुशासन से ही प्राप्त किया जा सकता है।

बेसेंट के अनुसार स्वतन्त्रता स्वेच्छाचार तथा उच्च खलता से सर्वाधिक दूर है। वह तो तभी उपलब्ध हो सकती है जब मनुश्य अपनी नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का संरक्षण करके भावात्मक पूर्णता को प्राप्त कर ले अतः बाह्य क्षेत्र में स्वतन्त्रता प्राप्त करने से पहले आत्मा की आन्तरिक स्वाधीनता आवश्यक है।

1914 में कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन के अवसर पर अपने भाषण में उन्होंने स्वतन्त्रता के समर्थन में मिल्टन तथा मिल का उल्लेख किया। 1915 में बम्बई अधिवेशन में उन्होंने 1818 के विनियम 3 को 'पुरानी बोबी बर्बरता का निर्लज्जतापूर्ण पुनरुद्धार' बतलाया और उसकी भर्त्सना की।

राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक सिद्धान्त

एनी बेसेंट के मन में भारत के लिए गहरा तथा स्थायी प्रेम था। 1930 में उन्होंने एक कविता लिखी जिसमें भारत को उठ खड़े होने के लिए ललकारा :

''हे भारत ! हे पूर्ण राष्ट्र !
हे भारत भविष्य के !
कितनी देर और है जब तुम अपना पद प्राप्त करोगे ?
कितनी देर और है जब दास स्वतन्त्र जीवन बितायेंगे ?
कितनी देर और है जब तुम्हारी आत्मा तुम्हारे सम्पूर्ण सागर में विलीन हो जायगी ?''

वे राष्ट्र को एक गम्भीर आन्तरिक जीवन से स्पन्दित आध्यात्मिक सत्ता मानती थीं। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें भारत के प्राचीन साहित्य और उस साहित्य में साकार हुए अतीत में ढूंढ़ निकाली थीं। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में बेसेंट ने कहा : ''राष्ट्र क्या है ? वह ईश्वरीय अग्नि की एक चिनगारी है, ईश्वरीय जीवन का एक अंश है, जिसे विश्व में निःश्वसित कर दिया गया है और जो अपने चतुर्दिक व्यक्तियोंकृ पुरुषों, स्त्रियों और बालकों.. के पुंज को एकत्र करके उन्हें एक समग्र के रूप में परस्पर आबद्ध कर देता है। उसके गुण, उसकी शक्ति, एक शब्द में उसकी जाति उसमें पिण्डीभूत हुए ईश्व रीय अंश पर निर्भर होती है। राष्ट्र का जादू उसकी एकता की भावना है।

बेसेंट राष्ट्र को दैवी अभिव्यक्ति का साधन मानती थीं। इस प्रकार फिस्टे, हेगेल और अरविन्द है।'' की भांति बेसेंट ने भी राष्ट्रवाद के आध्यात्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

बेसेंट के अनुसार राष्ट्र एक आध्यात्मिक सत्ता है, और ईश्वर की एक अद्‌भुत अभिव्यक्ति है। प्रत्येक राष्ट्र ईश्वर के किसी तात्विक सत्य को व्यक्त करता है। इस अनूठी बाह्य अभिव्यक्ति का प्रतीक राष्ट्र की जनता का जातीय चरित्र होता है। बेसेंट ने लिखा है : ''वह क्या चीज है जिससे राष्ट्र का निर्माण होता है ? वह चीज ईश्वर का अंश है जैसा कि अन्य व्यक्ति के सम्बन्ध में होता है। वह एक जीवात्मा है और उसके जन्मजात गुण होते हैं जो धीरे–धीरे प्रकट होकर उसके चरित्र का निर्माण करते हैं।

भारत के राष्ट्रीय जीवन का वैभव उसका साहित्य, उसका इतिहास, उसका धर्म और विज्ञान है, और ये सब इतने अधिक विकसित इसलिए हैं कि भारत इतना प्राचीन राष्ट्र है। किसी राष्ट्र के प्रारम्भिक जीवन में उस राष्ट्र के घटक स्वरूप व्यक्तियों को एक सूत्र में बाँधने के लिए धर्म अत्यन्त आवश्यक होता है। भारत मानो हिन्दुत्व के गर्भ में अवतरित हुआ था, और उसी धर्म ने उसके शरीर को दीर्घ काल तक ढाला था। धर्म परस्पर बाँधने वाली शक्ति है, और धर्म ने जितने दीर्घ काल तक भारत को बाँधकर रखा है, उतना अन्य किसी राष्ट्र को नहीं, क्योंकि वह संसार का सबसे पुरातन राष्ट्र है।''

बेसेंट का विश्वास था कि भारत की आध्यात्मिकता ही विश्व का परित्राण करेगी। उनके अनुसार देश की यही होतव्यता थी। बेसेंट लिखती हैं : ''व्यक्ति की भाँति राष्ट्र भी एक ऐसे जटिल

शरीर के निर्माण की प्रक्रिया है जिसमें एक श्रेष्ठ प्रकार का जीवन दृईश्वरीय जीवन– निवास करता है। जिस प्रकार आप में से प्रत्येक एक जीवात्मा है जो आपके चरित्र को ढालता, आपकी भवितव्यता को निर्धारित करता तथा आपके विकास को अनुप्राणित करता है, उसी प्रकार राष्ट्र एक जीवात्मा है : राष्ट्र एक उच्चतर कोटि का व्यक्ति है। राष्ट्र की आत्मा ईश्वर का अंश है, वह सीधी ईश्वर से आती है, और उस अंग में जो विशिष्ट गुण पिंडीभूत होते हैं उन्हीं के अनुरूप उनसे निर्मित राष्ट्र की चारित्रिक विशेषताएँ हुआ करती हैं।

राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद आध्यात्मिक तत्व है। वह जनता की अन्तरात्मा की अभिव्यक्ति है। राष्ट्र ईश्वर का साक्षात रूप है। किन्तु राष्ट्रवाद केवल एक प्रक्रिया है, सामाजिक विकास की अवस्था है, न कि उसकी परिणति। वह पूर्णत्व को तभी प्राप्त हो सकता है जब विश्वबन्धुत्व का आदर्श पूरा हो जाय, मत्सीनी, गान्धी और अरविन्द की माँति बेसेंट ने मी अपनी सम्पूर्ण वाक्पटुता का प्रयोग करके राष्ट्र का गुणगान किया, किन्तु उसे व्यक्तित्व के विकास की केवल एक अवस्था माना। उससे उच्चतर अवस्था विश्व नागरिकता का राज्य है बेसेंट ने लिखा हैः ''योजना की दूसरी अवस्था सब राष्ट्रों के स्वतन्त्र राष्ट्रमण्डल की स्थापना है। उस राष्ट्र मण्डल में भारत का समान स्थान और भूमिका होगी। यही कारण है कि अंग्रेज यहाँ आये और दूसरों को यहां से जाना पड़ा।

उनका उद्देश्य है कि भारत के महान आध्यात्मिक आदर्शों और ब्रिटेन की महान भौतिक और वैज्ञानिक प्रगति को समन्वित करके पूर्व तथा पश्चिम को भावी पीढ़ियों की सहायता के हेतु सामंजस्यपूर्ण सहयोग के सूत्रों से आबद्ध कर दिया जाय। भारत और ब्रिटेन इस राष्ट्रमण्डल के दो मुख्य घटक होंगे, और यह राष्ट्रमण्डल भविष्य के विश्व राष्ट्रमण्डल का आदर्श बनने वाला है । यह छोटे पैमाने पर अन्तर्राष्ट्रवाद का आदर्श है। बेसेंट का विश्वास था कि इस योजना में ब्रिटेन अपनी भूमिका अदा करेगा और इस प्रकार न्याय की सर्वोच्चता की रक्षा करेगा। वे लिखती हैं : "ब्रिटेन को जो अवसर मिला है वह उसी के लिए है, क्योंकि संसार भर में ऐसे स्वतन्त्र राष्ट्र हैं जो उसी से उत्पन्न हुए हैं और जिन्हें आप स्वशासित उपनिवेश (डोमीनियन) कहते हैं और अन्य अनेक ऐसे देश हैं जिन्हें उसने उन्हीं की जनता की सहायता से प्राप्त किया है और जो आधीन राज्य कहलाते हैं।

बेसेंट के सार्वभौमवाद के आदर्श का आधार उनका यह सिद्धान्त था कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा मानवता, इन सबकी प्रकृति अवयवी है। बेसेंट आध्यात्म तत्व (परमात्मा) को सर्वव्यापी मानती थीं। उन्होंने व्यक्तियों की सात कक्षाएँ निर्धारित की :

1. कोशिकीय प्राणी।
2. कोशिकाएँ ऊतकों में संघटित।
3. ऊतक अंगों में संघटित।
4. अंग शरीरों में संघटित।
5. शरीर समुदायों में संघटित।
6. समुदाय राष्ट्रों में संघटित।
7. राष्ट्र मानवता में संघटित।

अभिजाततंत्रीय समाजवाद

बेसेंट ने एक समाजवादी के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया था। उन्होंने व्यक्तिवाद की युयुत्सु प्रवृत्ति का विरोध किया और साहचर्यमूलक सह योग का उपदेश दिया। किन्तु उनकी सामूहिक संवेगों के उभाड़ से सहानुभूति नहीं थी, और न वे उस सिद्धान्तवादी समता के आदर्श से सहमत थीं जिसका सम्बन्ध प्रायः समाजवाद के साथ जोड़ा जाता है। वे सार्वजनिक सम्पत्ति पर आधारित ऐसा समाजवाद चाहती थीं जिसमें 'व्यक्तियों की योग्यताओं तथा कार्यों का बुद्धिमत्ता से सम्पादित, परस्पर लाभप्रद तथा आनन्ददायक सामंजस्य' हो। जनता के समाजवाद के स्थान पर उन्होंने ऐसी व्यवस्था का समर्थन किया जिसमें वयोवृद्ध तथा ज्ञान वष्द्ध लोगों को शासनतंत्र का नियमन करने का अधिकार हो।

अतः प्रभुत्व की समस्या के सम्बन्ध उनका दृष्टिकोण प्लेटो के सदृश था। प्लेटो की भांति वे भी चाहती थीं कि शासन का अधिकार उन लोगों के हाथों में हो जो नैतिक तथा बौद्धिक दृष्टि से प्रशिक्षित और अनुशासनबद्ध हों। वे समाज के संस्कारविहीन सदस्यों के हाथों में शासनतंत्र सौंपने के विरुद्ध थीं। उन्होंने लिखा हैः "हमें चाहिए कि राज्य को वह ज्ञान वापस दे दें जिसका उसके पास अभाव हो गया है, और राज्य को इस खतरे से बचायें कि कहीं ज्ञानशून्य निर्वाचकगण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं को न उलट दें, और सम्भवतः हमें युद्ध में अथवा उससे भी अधिक गहित अपमान की भट्टी में न झोंक दें।

निर्वाचकगण वस्तुतः ऐसे व्यक्ति को चुनने के लिए झगड़ते हैं जो उनकी खानों, उनकी नालियों और उनके स्थानीय मामलों की, जिन्हें वे स्वयं भलीभांति समझते हैं, देखभाल कर सकें। ये सामान्य सिद्धान्त हैं जिनका परिवर्धन किया जा सकता है और जिन्हें आधुनिक परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है। मतदाताओं द्वारा नियन्त्रित और संख्या द्वारा निर्देशित लोकतान्त्रिक समाजवाद कभी सफल नहीं हो सकता। कर्तव्य की भावना से नियन्त्रित और ज्ञान द्वारा निर्देशित वास्तविक अर्थ में अभिजाततन्त्रीय समाजवाद सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण उन्नति की ओर ले जाने वाला कदम होगा।"

बेसेंट का विश्वास था कि इस योजना में ब्रिटेन अपनी भूमिका अदा करेगा और इस प्रकार न्याय की सर्वोच्चता की रक्षा करेगा। वे लिखती हैंः "ब्रिटेन को जो अवसर मिला है वह उसी के लिए है, क्योंकि संसार भर में ऐसे स्वतन्त्र राष्ट्र हैं जो उसी से उत्पन्न हुए हैं और जिन्हें आप स्वशासित उपनिवेश (डोमीनियन) कहते हैं और अन्य अनेक ऐसे देश हैं जिन्हें उसने उन्हीं की जनता की सहायता से प्राप्त किया है और जो आधीन राज्य कहलाते हैं।

निष्कर्ष

मानव एकता तथा अन्तर्राष्ट्रवाद की आधुनिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में बेसेंट का विश्व नागरिकता के राष्ट्रमण्डल का आदर्श, और आत्मत्याग, समर्पण और अनन्य सेवा को पाठ सिखाने वाला देशभक्ति और धर्म के एकीकरण का सिद्धान्त राजनीतिक चिन्तन को उनकी महत्वपूर्ण देन है।

जब अनेक भविष्यवक्ता भारत के राष्ट्र होने के दावे को ही चुनौती दे रहे थे, उस समय राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में धार्मिक और आध्यात्मिक मार्ग अपनाकर बेसेंट ने भारतीय राजनीति की सराहनीय सेवा की। भारत के लिए स्वराज्य के आदर्श को लोकप्रिय बनाने के कारण बेसेंट का भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में सदैव गौरवपूर्ण स्थान रहेगा। बेसेंट ने समन्वय, सहिष्णुता तथा

सार्वभौम सामंजस्य के आदर्शों का उपदेश दिया। उन्होंने धार्मिक घृणा तथा साम्प्रदायिक मतवाद का उन्मूलन करने की प्रेरणा दी। उन्हें पूर्व तथा पश्चिम के मिलन में विश्वास था। उन्होंने आध्यात्मिक बन्धुत्व के आदर्श का प्रतिपादन कियो ।

संदर्भ

1. Besant, Annie. The Future of Indian Politics.
2. Besant, Annie. The Indian Ideals.
3. Besant, Annie. For India's Uplift.
4. Besant, Annie. Civilization^s Deadlocks and the Kings.
5. Besant, Annie. Civil and Religious Liberty.
6. Besant, Annie. The Changing World.
7. Besant, Annie. Lectures on Political Science.